अध्याय - ११

वानिकी अनुसंधान एवं मानव संसाधन विकास केन्द्र छिंदवाड़ा

वानिकी अनुसंधान एवं मानव संसाधन विकास केन्द्र, छिंदवाड़ा (उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर के अधीन) की हाल ही में स्थापना की गई है। यह केन्द्र विशिष्ट क्षेत्रों में वानिकी अनुसंधान एवं निर्धनता में कमी लाने हेतु मानव संसाधन के विकास करने के लिए उत्तरदायी है।

केन्द्र के उद्देश्य

केन्द्र के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं:

१. पोषणीय वन प्रबन्धन के लिए पद्धतियों का विकास करना।

२. आनुवंशिक एवं सुधार कार्यक्रमों द्वारा वन उत्पादकता बढ़ाना।

३. वन उत्पादों के उपयोग में सुधार करना।

४. संसाधन प्रबन्धन एवं पर्यावरण सुरक्षा से संबंधित सामाजिक-आर्थिक पहलुओं पर अध्ययन करना।

५. पोधशाला एवं रोपण प्रौद्योगिकी में प्रशिक्षण देकर मानव संसाधन विकास करना।

मानव संसाधन विकास

वानिकी सेक्टर में प्रशिक्षित कार्मिकों की कमी को ध्यान में रखकर, केन्द्र ने पौधशाला एवं रोपण प्रौद्योगिकी में निम्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों को तैयार किया है।

१. निचले स्तर के उपयोगकर्ताओं के लिए चार माह का जूनियर प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम।

२. मध्यम स्तर के उपयोगकर्ताओं के लिए आठ माह का सीनियर प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम।

३. विभिन्न उपयोगकर्ताओं समूहों के लिए अल्प अवधि का पुनश्चर्या पाठ्यक्रम।

वर्ष के दौरान इन पाठ्यक्रमों के संबंध में प्रगति इस प्रकार हैं:

१. पौधशाला एवं रोपण प्रौद्योगिकी में २ जूनियर प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम पूरे किए गए।

२. वरिष्ठ प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम के लिए पाठ्य विषय विकसित किए गए तथा पाठ्यक्रम शुरू किया गया।

३. वन कृषकों के लिए कृषिवानिकी में प्रशिक्षण कार्यक्रम के विकास।

अनुसंधान कार्यक्रम

वन उत्पादकता पर संयुक्त वन प्रबन्ध अभिगम के संघात पर अध्ययन

छिंदवाड़ा जिले के चार गाँवों, उदाहरणार्थ- मेघासीओनी, उभारिया-ईसरा, नवगाँव तथा चिकताबोरी, के सूक्ष्म प्लानों का अध्ययन किया गया। उपयुक्त साहित्य एकत्र किया गया तथा सम्बद्ध व्यक्तियों से सम्पर्क किया गया। नामित गाँवों का सर्वेक्षण करने के लिए एक प्रश्नावली विकसित की गई है।

पर्यावरण संघात मूल्यांकन पर अध्ययन तथा पंचकानन क्षेत्र में विवृत खनन क्षेत्रों का सुधार

दमुआ, पारासिया तथा छिंदवाड़ा में प्रभावित क्षेत्रों में सर्वेक्षण किया गया। आगे कार्य प्रगति पर है।

कुछ देशज़ वन प्रजातियों की पत्तियों, छाल, फलों तथा जड़ों के उपयोग के लिए पादप-रासायनिक परीक्षण

पादप सामग्री एकत्र करने के लिए छिंदवाड़ा जिले के पातालकोट तथा तामिया घाटी क्षेत्र में अन्वेषणात्मक पादपी दौरे किए गए। ५५ पादप प्रजातियां एकत्र की गई तथा हरबेरियम बनाया जा रहा है। एकत्र की गई पादप सामग्रियों की वर्गीकरणात्मक पहचान का कार्य प्रगति पर है।

पांच यूकेलिप्टस प्रजातियों से सुरभित तेल निस्सारित किया गया तथा रोगाणुकरोधी क्रिया के लिए मूल्यांकित किया गया। प्राकृतिक सुरभित उत्पादों से संबंधित साहित्य, नियमित रूप से सर्वेक्षण करके, एकत्र किया जा रहा है।

छिंदवाड़ा तथा इसके आसपास के इलाकों में सागौन (टैक्टोना ग्रैन्डिस) के नाशिकीटों की पारिस्थितिकी एवं उनका नियंत्रण

सागौन को क्षति पहुंचाने वाले प्रमुख नाशिकीटों पर आधारभूत सूचना एकत्र करने का काम प्रगति पर है। चयनित पौधशालाओं एवं रोपणों में, सागौन को क्षति पहुंचाने वाले नाशिकीटों की पहचान की गई (जलवायवी अवस्था के संबंध में) तथा क्षतियों का मूल्यांकन करके अभिलिखित किया गया। क्षति करने वाले प्रमुख नाशिकीटों में हैं - निष्पत्रक, हीब्लीया प्यूरा, कंकालक यूटेक्टोना मैकेरोलिस, सफेद भृंगक होलोट्राइकिया प्रजातियां तथा दीमक ओडोन्टोटर्मिस प्रजातियां।

बेसिल्स थूरिंगिन्सिस के दो विविध उत्पादों (बायोएस्प तथा बायोलेप) की क्षमता की जांच करने के लिए, चन्दामाता (म०प्र०) में एक क्षेत्र परीक्षण किया गया। सागौन कंकालक, यूटेक्टोना मैकेरेलिस, के लार्वा पर, इन उत्पादों की विभिन्न मात्राओं का परपोषी पादप (पांच साल पुराना) पर छिड़काव किया गया। परिणामों ने दर्शाया कि इस नाशी जीव के विरूद्ध बायोएस्प २ प्रतिशत, अन्य सान्द्रताओं की अपेक्षा, अत्यधिक प्रभावी और बेहतर था।

क्षेत्र अध्ययन

पौधशाला रोपण नाशीजीव: छिंदवाड़ा तथा इसके आसपास के क्षेत्रों के चयनित स्थानों में छः पौधशालाओं एवं रोपणों में बहुउद्देशीय वृक्ष प्रजातियों से नौ नाशिकीटों की पहचान की गई।

सागौन की कली से कलम बांधने में प्रशिक्षण

पौधशाला दक्षताओं का प्रदर्शन

बीज उत्पादन क्षेत्र में प्रेक्षण

रा०व०अ०सं० पौधशाला, अमरकंटक, म० प्र०

- ऐल्बिर्जिया लैबेक के एफिड़ों पर एक क्षेत्र परीक्षण तैयार किया गया। परिणामों ने दर्शाया कि ०.०१ प्रतिशत फेनवलरेट इसके बाद मल्टिप्लेक्स (मल्टिनीम) ०.३ प्रतिशत, छः दिनों के बाद एफिड आबादी को कम करने में, सबसे प्रभावी थे।

- तैयार किए गए एक क्षेत्र परीक्षण ने दर्शाया कि नीम पत्ती चारा निष्पत्रक, क्लीओरा कॉर्नेरिया, के लार्वा के मामले में डीसिस (डेल्टामीथ्रिन) ०.००५ प्रतिशत सबसे प्रभावी था।

२. प्रशिक्षार्थियों के लिए प्रदर्शन के रूप में, १०० युवा केंचुओं, ईसेनिया फोइटिडा, वन घास-फूस तथा गोबर (२.५ x १ x १ मी. आकार की क्यारी) के साथ २०० कि.ग्रा. वर्मिकम्पोस्ट उत्पादित की गई।

३. बांस के पौधों की वृद्धि पर वर्मिगोल्ड तथा रोज़गोल्ड के प्रभाव का पता लगाने के लिए प्रयोग किए गए। यह देखा गया कि बांस के पौधों की वृद्धि को बढ़ाने में वर्मिगोल्ड २०० ग्रा. + फार्मयार्ड खाद + रेत (२० x १० से.मी. आकार की पॉलीथीन की थैलियों में) प्रभावी है।